



पतंजलि विश्वविद्यालय University of Patanjali

Circular
File

पत्रांक (Ref.) UOP/2020/.....

दिनांक (Date) : 03.02.2020

सूचना

पतंजलि विश्वविद्यालय में अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राओं का सौभाग्य है कि उन्हें अध्ययन के साथ-साथ स्वास्थ्य लाभ सम्बन्धी सुविधाएँ भी उनके परिसर में ही अति-सुगमता से सुलभ हैं, जिसका परामर्श निःशुल्क है जिससे समय की बचत के साथ-साथ विद्यार्थी स्वास्थ्य लाभ सम्बन्धित सुविधा अपने परिसर में ही प्राप्त कर सकते हैं और अन्यत्र चिकित्सा हेतु बाहर जाने में व्यर्थ होने वाले समय को अध्ययन में लगाया जा सकता है।

अतः अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि यदि किसी भी विद्यार्थी को अपने स्वास्थ्य सम्बन्धित विकारों की जाँच करानी हो या स्वास्थ्य सम्बन्धित कोई भी उपचार लेना हो तो विद्यार्थी को चाहिए कि सर्वप्रथम विद्यार्थी द्वारा चिकित्सीय परामर्श के लिये पहले पतंजलि योगपीठ फेज-1 स्थित पतंजलि आयुर्वेद हॉस्पिटल में परामर्श लिया जाये। रोग की जटिलता के अनुसार वैद्यों के परामर्श से ही बाहर भेजा जायेगा, तदोपरान्त ही अन्यत्र जगह से उपचार लेने पर उनका चिकित्सा प्रमाण-पत्र मान्य होगा।

(डॉ. महावीर अग्रवाल)

प्रति-कुलपति

प्रतिलिपि सादर सूचनार्थः

1. निजी सचिव, कुलपति, माननीय कुलपति महोदय के सादर सूचनार्थ।
2. कुलसचिव/परीक्षा नियन्त्रक, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
3. संकाय अध्यक्ष, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
4. निदेशक, सेवा योजन, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
5. समस्त विभागाध्यक्ष/विभाग प्रभारी/समस्त शिक्षक/शिक्षिकाएं/योग प्रशिक्षक/प्रशिक्षिकाएं, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
6. राभी नोटिस बोर्ड हेतु।
7. कार्यालय प्रतिलिपि।



पतंजलि विश्वविद्यालय University of Patanjali

Ciscellan

उत्तराखण्ड विधान सभाले द्वारा पतंजलि विश्वविद्यालय अधिनियम संख्या 4, वर्ष 2006 के अन्तर्गत स्थापित
Established by Uttarakhand State Legislature Under the University of Patanjali Act No. 4 Year 2006

पत्रांक (Ref.) : UOP/PVC/2020/ 886

दिनांक (Date) : 28-01-2020

आवश्यक सूचना

विश्वविद्यालय परिवार के समस्त शिक्षक, प्रशिक्षक, छात्रावास अधीक्षक/अधीक्षिका, पर्यवेक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी एवं छात्र/छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विश्व में फैले कोरोना वायरस के सम्बन्ध में स्वास्थ्य विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी निम्न सूचनाओं का पालन करते हुए अपने तथा अपने आस-पास के लोगों को जागरूक करें।

Ministry of health's emergency notification to the public that the **Coronavirus influenza** outbreak this time is very very serious & fatal. There's no cure once you are infected.

It is spreading from China to various countries

Prevention method is to keep your throat moist, do not let your throat dry up. Thus do not hold your thirst because once your membrane in your throat is dried, the virus will invade into your body within 10 mins.

- Drink 50-80cc warm water, 30-50cc for kids, according to age.
- Everytime u feel your throat is dry, do not wait, keep water in hand.
- Do not drink plenty at one time as it doesn't help, instead continue to keep throat moist.
- Till end of March 2020, do not go to crowded places, wear mask as needed especially in train or public transportation
- Avoid fried or spicy food and load up vitamin C.

The symptoms/ description are:

1. Repeated high fever
2. Prolonged coughing after fever
3. Children are prone
4. Adults usually feel uneasy, headache and mainly respiratory related issues
5. Highly contagious


(डॉ. महावीर अग्रवाल)

प्रति-कुलपति
डा० महावीर अग्रवाल

प्रति-कुलपति

शिविर कार्यालय : पतंजलि योगपीठ, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, निकट बहादुराबाद, हरिद्वार-249405, उत्तराखण्ड, भारत
Camp Office : Patanjali Yogpeeth, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar-249405, Uttarakhand, India
(फोन) Phone : 01334-242526 (ई-मेल) E-mail : contact@uop.edu.in (वेब) Web. : www.universityofpatanjali.com



पतंजलि विश्वविद्यालय University of Patanjali

उत्तराखण्ड विधान मण्डल द्वारा पारित पतंजलि विश्वविद्यालय अधिनियम संख्या 4, वर्ष 2006 के अन्तर्गत स्थापित
Established by Uttarakhand State Legislature Under the University of Patanjali Act No. 4, Year 2006

circuler

पत्रांक (Ref.) :

UOP/Reg./2018/148

दिनांक (Date) :

16-05-2018

कार्यालय आदेश

पतंजलि विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों, प्रशिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विश्वविद्यालय के नवीन सत्र से निम्नलिखित दो प्रकोष्ठ की स्थापना की जा रही है छात्र/छात्राओं के अनुशासन को बनाए रखने में मदद करेगा।

1- एन्टी रैगिंग प्रकोष्ठ (Anti Ragging Cell)

यह प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय में रैगिंग से सम्बन्धित होने वाली किसी भी प्रकार की घटना को रोकने या निवारण हेतु गठित की जा रही है जिसके निम्नलिखित सदस्य होंगे :-

- 1- डीन, शैक्षणिक एवं प्रशासन - संयोजक - 9817070282
- 2- निदेशक शैक्षणिक - सदस्य - 8954300305
- 3- समस्त छात्रावास प्रभारी - सदस्य - (पुरुष छात्रावास- 9313186405, महिला छात्रावास- 9760000163)
- 4- एक छात्र एवं छात्रा (प्रकोष्ठ द्वारा चयनित छात्र/छात्राओं के प्रतिनिधि के रूप में)

2- महिला उत्पीड़न प्रकोष्ठ (Women Grievance Cell)

यह प्रकोष्ठ छात्राओं को उत्पीड़न आदि से संबंधित समस्या के निवारण हेतु गठित की जा रही है जिसके निम्नलिखित सदस्य होंगे :-

- 1- डॉ. साधना - संयोजिका - 8954890151
- 2- डॉ. वैशाली गौड़ - सदस्या - 8279437439
- 3- डॉ. नीलम मिश्रा - सदस्या - 9634008099
- 4- श्रीमती प्रज्ञा माता जी - सदस्या - 9760000163

(प्रो० दिनकर बुडाथोकी)

कुलसचिव

प्रतिलिपि:-

- 1- निजी सचिव कुलपति, मा10 कुलपति महोदय के सूचनार्थ।
- 2- प्रति-कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 3- परीक्षा नियन्त्रक, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 4- निदेशक शैक्षणिक, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 5- दोनों प्रकोष्ठों के सम्बन्धित सदस्यगण, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 6- समस्त प्राध्यापक/प्रशिक्षक/छात्रावास अधीक्षक, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 7- समस्त सूचना पट्ट, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
- 8- कार्यालय प्रति।



पतंजलि विश्वविद्यालय University of Patanjali

एन. एच. २४९४०५, दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग निकट बहादुराबाद, हरिद्वार-२४९४०५, उत्तराखण्ड, भारत
Established by Uttarakhand State Legislature Under the University of Patanjali Act No. 4, Year 2006

UOP/2020/१५५

04-03-2020

पत्रांक (Ref.) :

दिनांक (Date) :

कार्यालय आदेश

समस्त छात्र/छात्राओं, शिक्षक/शिक्षिकाओं, योग प्रशिक्षक/प्रशिक्षिकाओं, छात्रावास अधीक्षक/अधीक्षिकाओं को सहर्ष सूचित किया जाता है कि अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कल दिनांक 05 मार्च 2020 को प्रातः 09:00 से 10:00 तक यज्ञ का आयोजन पतंजलि योगपीठ फेस-1 स्थित यज्ञशाला में सम्पन्न होगा। कार्यक्रम के पश्चात् कक्षाओं का संचालन यथावत रहेगा।

कार्यक्रम में उपरोक्त सभी की उपस्थिति अनिवार्य है।

| क्र.सं. | कार्यक्रम रूपरेखा | समय |
|---------|--|---------------------|
| 1- | प्रातः यज्ञ | प्रातः 09:00 बजे से |
| 2- | स्वोद्गार- (अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर) 1. डॉ. आरती यादव 2. डॉ. अन्जू त्यागी 3. डॉ. वैशाली गौड | (09:30 से 09:40) |
| 3- | गीत- नारी शक्ति- श्री चन्द्रमोहन मिश्र | 09:40 से 09:50 |
| 4- | अध्यक्षीय सम्बोधन- माननीय प्रति-कुलपति जी | 09:50 से 10:00 |
| 5- | शान्तिपाठ | प्रातः 10:00 |

(कुलसचिव)

पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रतिलिपि: सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव कुलपति, माननीय कुलपति महोदय के सादर सूचनार्थ।
2. प्रति-कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
3. संकायाध्यक्ष (शिक्षण एवं शोध), पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
4. परीक्षा नियन्त्रक, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
5. निदेशक शैक्षणिक एवं सेवायोजन, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार।
6. विभागाध्यक्ष, मानव संसाधन विभाग (सुविधा, फोटोग्राफी, साउण्ड आदि उचित व्यवस्था हेतु)।
7. उपरोक्तानुसार समस्त सम्बन्धित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
8. सूचना पट्ट/कार्यालय प्रति।

राष्ट्रीय
महिला दिवस
2018

सृष्टि संवत्सर, भारतीय नव संवत्सर एवं राष्ट्रीय महिला दिवस

डॉ. साध्वी देवप्रिया,
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा-
दर्शन विभाग
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

चैत्र

सुदी प्रतिपदा
पूरे भारतवर्ष

में सृष्टि संवत्सर, भारतीय नववर्ष, गुडि पाड़वा (महाराष्ट्र) तथा कर्नाटक, तेलंगाना व आन्ध्रप्रदेश में युगादि के नाम से बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसी पावन पर्व को पतंजलि योगपीठ "राष्ट्रीय महिला दिवस" के रूप में हर वर्ष मनाता है। इस दिन को राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने का हेतु यह है कि परम पूज्य श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का मानना है कि सृष्टि की रचना माँ से होती है, क्योंकि आज ही के दिन उस जगज्जननी जगदम्बा से इस सृष्टि की रचना हुई सो महिला पतंजलि योग समिति की बहनों के लिए आज के दिन से बड़ा उत्सव कोई हो नहीं सकता है।

म

नुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंग, वृक्ष आदि हर प्रकार की सृष्टि की उत्पत्ति माँ से ही होती है। यदि हम मनुष्य जाति की बात करें कि हमें मानव जाति को उत्कृष्ट बनाना है, तो हमें सर्वप्रथम राष्ट्र की नारियों को शारीरिक दृष्टि से, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत बनाना होगा। एक बच्चा गर्भावस्था से लेकर 5 वर्ष की आयु तक जितना सीख जाता है वह शिक्षा एक तरफ और फिर जीवन भर जो सीखता है वह दूसरी तरफ रखें तो तराजू के दोनों पलड़े समान मिलेंगे। महिलाएं केवल सन्तति का निर्माण ही नहीं करती अपितु राष्ट्र का सामाजिक ढाँचा आर्थिक, आपराधिक, सांस्कृतिक, व्यवहारिक आदि अनेक पहलुओं की दृष्टि से तय करती हैं अर्थात् देश के लोगों का शारीरिक ढाँचा वैसा ही होगा जैसा माँ अपने बच्चों को खान-पान देंगी, व्यायाम-प्राणायाम करायेगी, ठीक समय पर सोना-उठना सिखायेगी। समाज का व्यवहार व चरित्र वैसा ही होगा जो संस्कार व शिक्षा बालक को बचपन में मिलेगी। देश की आर्थिक स्थिति तभी सुदृढ़ होगी जब माँ अपनी सन्तानों को बिमारियों और बुराईयों से बचायेगी तथा जो आवश्यक सामग्री खरीदनी है वह भी स्वेदशी की खरीदने का संस्कार उनके दिल-दिमाग में बिठायेगी। जिस दिन सभी माताएँ अपने बेटों को सिखायेंगी कि देश की सभी माँ, बहन, बेटियों के अपनी ही माँ,





बहन, बेटी की तरह देखना व उसका सम्मान करना, उस दिन इससे दुराचार, व्यभिचार, बलात्कार व अपहरण जैसी समस्याएँ समूल नष्ट हो जायेंगी।

जिस दिन इस देश की माताएँ कर्मयोगिनी बनकर स्वयं 14 घण्टे पुरुषार्थ करना सीख जायेंगी उस दिन इस देश में कोई गरीब, लाचार, भिखमंगा ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेगा। जब माँ आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न होगी, तब वह राम, कृष्ण, अर्जुन, अभिमन्यु, हनुमान व अंगद जैसी महान् आत्माओं को अपने गर्भ से जन्म दे पायेगी। इस प्रकार एक नारी केवल सन्तति का ही निर्माण नहीं करती अपितु उसके माध्यम से भारत की पारिवारिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, जीवन मूल्यों की व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था व अपने राष्ट्र की व्यवस्था का भी निर्माण करती है। लेकिन यह विराट् कार्य वह तभी सम्पन्न कर पायेगी जब वह स्वयं एक योगिनी, कर्मयोगिनी, ऋषिका बन सके। श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने पिछले 2 दशकों में राष्ट्र निर्माण हेतु जो योग, आयुर्वेद व स्वदेशी आदि की क्रान्तियाँ की, उनमें महिलाओं की एक अहम भूमिका रही है। प्रथम उन्होंने स्वयं के लिए तय किया कि हमारा जीवन योगयुक्त होना चाहिये फिर अपने परिवारों, रिश्तेदारों व मित्रों को योगी बनाया और अब पूरा जिला, प्रान्त व राष्ट्र योगयुक्त हो यह भी वे तय कर रही हैं। उन्होंने पहले स्वयं अपने जीवन में आयुर्वेद व स्वदेशी को अपनाया, फिर अपने घर में, रिश्तेदारों व मित्रों को इस मिशन से जोड़ा तथा अब पूरा समाज भी स्वदेशी व आयुर्वेद को अपनाये, यह भी महिलाएँ तय कर रही हैं। पूरे देशभर में 25 लाख से भी अधिक महिलाएँ श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के पावन सान्निध्य में व उनके निर्देशन में इस मिशन से जुड़कर अपनी सेवाएँ अर्पित कर रही हैं।

हमारा मानना है कि नारी को मात्र साक्षर कर देना ही उसका सम्पूर्ण विकास नहीं है वह तो उसके व्यक्तित्व का मात्र एक हिस्सा है। जब उसका शरीर महारानी लक्ष्मीबाई की तरह, झलकारी, चैनम्मा की तरह सुदृढ़ होगा, बुद्धि शारदा, गार्गी, वागाम्भृणी की तरह सूक्ष्म होगी, जब सीता माता जैसी पवित्रता, धैर्य व सहनशीलता होगी, माता सावित्री जैसा आत्मिक बल या तप का प्रभाव होगा जिससे कि यमराज से भी टक्कर लेने की शक्ति अनुभव करेंगी, माता अनसूया जैसा योग का बल, पद्मा धाय जैसी राष्ट्र भक्ति जो अपने वतन की रक्षा के लिए स्वयं अपने ही पुत्र की गर्दन तलवार से काट दे इत्यादि सर्वाङ्गीण रूप से विकसित होकर जब उसका अस्तित्व व व्यक्तित्व समाज व राष्ट्र के समक्ष आयेगा तो वह पुरुष की शक्ति को भी अपनी सूझ-बूझ, पवित्रता व दूर दृष्टि से जब उचित दिशा में लगाना सीख जायेगी तब वह इस धरती को ही स्वर्ग बना सकती है। भारत की महिलाओं को ये सब उपरोक्त गुण विरासत में ही उपलब्ध हैं। हम सब में उन उच्च जीवन मूल्यों के बीज तो उपलब्ध हैं

यदि हमें मानव जाति को उत्कृष्ट बनाना है, तो हमें सर्वप्रथम राष्ट्र की नारियों को शारीरिक दृष्टि से, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत बनाना होगा।

एक नारी केवल सन्तति का ही निर्माण नहीं करती अपितु उसके माध्यम से भारत की पारिवारिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था, जीवन मूल्यों की व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था व अपने राष्ट्र की व्यवस्था का भी निर्माण करती है। लेकिन यह विराट् कार्य वह तभी सम्पन्न कर पायेगी जब वह स्वयं एक योगिनी, कर्मयोगिनी, ऋषिका बन सके।

ही, आवश्यकता है बस उन्हें अंकुरित करने की। जिससे वो अंकुरित, पुष्पित व फलित हो सकते हैं, वह एक मात्र उपाय है 'योग'। आज भारतीय नारी पुनः अंगड़ाई ले रही है। राष्ट्र भर में प्रत्येक गाँव, तहसील व जिले में बहनें महिला पतंजलि योग समिति से जुड़ने में अपना गौरव महसूस कर रही हैं। अन्त में राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में सम्पूर्ण महिला समिति की बहनों को कृतज्ञता पूर्वक अपनी शुभकामनाएं व उनकी निःस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें धन्यवाद अर्पित करते हुए अपने लेख को विराम देती हूँ तथा साथ ही यह आह्वान भी करती हूँ कि अधिक से अधिक बहनें महिला पतंजलि योग समिति से जुड़ें ताकि हम सब बहनें मिलकर एक सुन्दर, स्वस्थ परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकें। ●

सृष्टि नवसंवत्सर एवं अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस



डॉ. साध्वी देवप्रिया | प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा- दर्शन विभाग, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार



रहे हैं, उसका नियम यह है कि सृष्टि की रचना में माँ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए 'माँ' शब्द के साथ ही शक्ति शब्द का प्रयोग किया जाता है- 'मातृशक्ति'। 'पुरुष शक्ति' ऐसा प्रयोग कभी कहीं देखा-सुना नहीं गया। यदि विज्ञान की बात करें तो साइन्स कहती है कि दृश्य जगत के मूल में एक शक्ति (Energy) ही काम कर रही है। वेद-उपनिषद् आदि ऋषियों की बात सुनें तो उनका कहना है कि एक जीवनी शक्ति, प्राणशक्ति हम सब मनुष्यों के अन्दर व बाहर कार्य कर रही है।

प्राण:माता प्राण:पिता प्राण:क्षाता।

प्राण:श्वसा प्राण: आचार्य: प्राणो ब्रह्मेति॥

वह शक्ति अपने अनन्त-अनन्त रूप में विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। योग-प्राणायाम आदि की सहायता से हम उसे बढ़ा भी सकते हैं और इसी शक्ति की न्यूनता से जब शरीर में व्याप्त सूक्ष्म व स्थूल नाड़ियों में ऑक्सीजन या प्राणशक्ति पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाती है तभी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। सबसे अधिक मात्रा में ऑक्सीजन मस्तिष्क को चाहिए होती है अर्थात् कुल प्राणशक्ति की मात्रा का 20 प्रतिशत प्रयोग अकेला मस्तिष्क करता है और इतनी प्राणशक्ति यदि उसे न मिले तो मनोरोग उत्पन्न होने लगते हैं, जैसे कि अप्रसन्नता, तनाव, जस्ूरत से अधिक सोना, गलत सोचना, अति अपेक्षा रखना, टोन्टिंग करना, दूसरे को ब्लेम करना, अपने दुःख का कारण दूसरों को मानना इत्यादि। इन्हीं मानस रोगों के फलस्वरूप फिर शरीर में भी रोग उत्पन्न होने लगते हैं और व्यक्ति अपने मानव जीवन के लक्ष्य को भूलकर रोगों के चंगुल में फँस जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि उन्हें ठीक कैसे करें? उपाय क्या हैं? इसका सीधा सा उत्तर है- योग-योग-योग। आसन, प्राणायाम, सात्त्विक व संतुलित आहार, ध्यान, सेवा, समर्पण, भक्ति या फिर महर्षि पतंजलि की भाषा में **अष्टांग योग** और लोक की सरलतम भाषा में कहें तो **'पवित्रता, पुरुषार्थ व परमार्थ'**। अब बात शुरू हुई थी कि माताओं के साथ शक्ति शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है? इसका उत्तर है

चैत्र

शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को पूरे भारत वर्ष में सृष्टि संवत्सर, नववर्ष, गुड़ी पड़वा या युगादि के रूप में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है और केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पूरी सृष्टि में भी यह नूतनता देखने को मिलती है। वृक्षों के पत्ते जो शिशिर ऋतु में सूखकर गिर गए थे पुनः सुकोमलता के साथ वृक्षों पर हँसते-मुस्कराते-लहराते नजर आते हैं। शस्य, श्यामला धरती माता, प्रकृति माता फल-फूलों से लदी हुई अत्यन्त सुसज्जित-अलंकृत व भरी-पूरी नजर आती है। अंग्रेजी वर्ष के अनुसार इसी माह अर्थात् 25 मार्च को यह पर्व हम मनाने जा रहे हैं। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्मा ने इस सृष्टि की रचना की थी। आज जिस जड़-चेतन-सृष्टि को हम वर्तमान रूप में देख पा



66

भगवान् के सच्चे पुत्र-पुत्रियाँ बनकर, गुरु के सच्चे शिष्य-शिष्याएँ बनकर देश-धर्म के सच्चे सेवक-सेविकाएँ बनकर जन-जन को दिव्य बनाना है, आध्यात्मिक राष्ट्र बनाना है।

कि श्रद्धा, भक्ति, विश्वास, सेवा, विनयशीलता, क्षमाशीलता व पवित्रता आदि सद्गुण वह पुरुष की अपेक्षा अधिक लेकर ही पैदा होती है। अर्थात् ये गुण पुरुष में कठोर साधनाओं से उत्पन्न होते हैं तो माताओं में ये जन्म से ही स्वभाविक व सहज होते हैं। अतः पुरुष भी जब अधिक शक्ति प्राप्त करने की इच्छा करता है तो देवी की पूजा करता है या गाय माता की पूजा करता है। इस समस्त सृष्टि का मूल जो शक्ति (Energy), ऊर्जा या एनर्जी है, एक नारी सहज ही उस मूल से जुड़ जाने की सामर्थ्य रखती है और जब तक कोई पौधा अपने मूल से जुड़ा रहता है तब तक उसमें रोज नए-नए पत्ते व फल-फूल आते रहते हैं। अपनी हरी-भरी छाँव से व फल-फूलों से हजारों व्यक्तियों की सेवा करता है, उन्हें आश्रय देता है, लेकिन मूल से कट जाँया हाट जाँया तो मुरझाकर सूख जाता है। उसी प्रकार हम सब मनुष्यों व मनुष्येतर प्राणियों का मूल आधार है- प्राणशक्ति। इससे जुड़े रहें तो नित्य नए-नए विचार-भाव-प्रसन्नता-सेवा-दान-दक्षिणादि के विचार व भाव, मन व हृदय में आते रहते हैं और उस मूल से कट जाँया तो डिप्रेशन आदि बुरे-बुरे विचार हमारी प्रसन्नता को सुखाकर हमारे जीवन का ही नाश कर देते हैं। इस शक्ति से जुड़े रहने का उपाय है-योग। गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण भी अर्जुन को योगी बनने का ही उपदेश या आदेश देते हैं।

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।

कर्मिभ्यश्चाधिको योगी, तस्माद् योगी भवार्जुन॥ गीता (6.46)

अर्थात् जीवन में तीन मार्ग हैं साधना के, चाहे ज्ञान की प्रधानता रखते हुए चलें या कर्म की या फिर भक्ति की, लेकिन तीनों के मूल में 'योग' होना अनिवार्य है। जो व्यक्ति स्वयं योगयुक्त होकर अपने शरीर व मन को स्वस्थ रखता है तथा औरों को भी वैसा करने में मदद करता है, यही उसकी सच्ची ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति व धर्मभक्ति है। इसका जीवंत उदाहरण (Live Example) पतंजलि योगपीठ तथा श्रद्धेय स्वामी जी महाराज व पूज्य आचार्य जी हैं। स्वयं योग को केन्द्र में रखकर जीना व दूसरों को भी इस योग से जोड़ना, यह ऐसी सेवा है जिसमें खर्चा कम और लाभ अनन्त है व हानि शून्य प्रतिशत है। इस सेवा के लिए या इस पुण्य रूपी धन को कमाने के लिए या इस निर्दोष सुयश को कमाने के लिए न डिग्रियों की आवश्यकता है, न धनवान् होने की, न रूपवान् होने की, न ऊँचे खानदान की, न ऊँची जाति की, न आयु का कोई प्रतिबंध है, न स्थान विशेष की सीमा का कोई प्रतिबंध है, यह योग का द्वार सबके लिए, सदा सर्वत्र खुला हुआ है। इसके माध्यम से हम दूसरों को सुखी बना सकते हैं क्योंकि मनुष्य शरीर को धारण करके केवल अपने ही सुख के लिए सोचना तो जीवन का अपमान करना है, यह पुनीत कार्य मेरे देश की हर माँ, बहन व बेटी अत्यन्त सहजता से कर लेती है। जिस घर-परिवार में वह इतने लाड़-चाव से पली-बढ़ी, रातों-रात उस सबका त्याग करके एक अनजाने-अपरिचित परिवार के लोगों की आजीवन निःस्वार्थ सेवा करने का निर्णय कर लेती है, इसलिए पूज्या, शक्ति व महान् कहलाती है तथा अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का पूर्ण निष्ठा व कुशलता से निर्वहन करते हुए, देश, धर्म व राष्ट्रोत्थान के कार्यों में, समाज सेवा व भागवत सेवाओं में भी बढ़-चढ़कर भाग लेती है। **मुझे यह कहते हुए गर्व की अनुभूति होती है कि अपने देश को स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान् व आध्यात्मिक राष्ट्र बनाने हेतु लगभग 25-30 लाख बहनें महिला पतञ्जलि योग समिति के माध्यम से परम पूज्य स्वामी जी महाराज व पूज्य आचार्य जी के सान्निध्य में देशभर में पूरी प्रामाणिकता व प्रसन्नता से सेवाएँ दे रही हैं।** स्वदेशी के मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। उन सभी राष्ट्रनिष्ठ, गुरुनिष्ठ, ब्रह्मनिष्ठ, कर्मयोगिनी बहनों को कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करते हुए मैं 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 121वें सृष्टि नवसंवत्सर पर पूरे पतञ्जलि योगपीठ की ओर से बधाई देती हूँ। वे सभी बहनें सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मीस्वरूपा, शक्तिस्वरूपा बनकर इसी प्रकार अपने जीवन का व राष्ट्र का उत्थान करती रहें। सृष्टि में तो नव-निर्माण का कार्य निरन्तर चलता ही रहता है, पर इस युग में इस कार्य की गति अत्यन्त तेजी से हो रही है। आज यह योग की अग्नि पूरे भारत के साथ-साथ पृथ्वी के लगभग 200 देशों में फैल चुकी है। हमें अपने जीवन की आहुति देकर इस योग की अग्नि को, श्रद्धा की अग्नि को सतत जलाए रखना है, बुझने नहीं देना है और पुरुष हों या महिला अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त इस प्राणशक्ति से जुड़कर अपने समस्त रोगों का, दोषों का, अंधकार-अज्ञान का नाश करके शक्तिस्वरूप, शक्तिपुञ्ज बनकर औरों को भी इस दिव्यता से युक्त कराना है। भगवान् के सच्चे पुत्र-पुत्रियाँ बनकर, गुरु के सच्चे शिष्य-शिष्याएँ बनकर देश-धर्म के सच्चे सेवक-सेविकाएँ बनकर जन-जन को दिव्य बनाना है, आध्यात्मिक राष्ट्र बनाना है। <<





नारी तुम एक शक्ति हो



डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया | संकायाध्यक्षा एवं
कुलानुशासिका, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

त्याग, समर्पण, स्नेह, शक्ति की मूरत हो,
बाबा की निशानी, माँ की प्यारी सूरत हो।
घर-आंगन में बहने वाली पावन गंगा,
इतना ऊँचा व्यक्तित्व की साक्षात कंचनगंगा हो।

इस

लेख को पढ़ने वाले सभी भाई-बहनों को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। आज का दिन अपने अपने-आपमें बहुत महत्वपूर्ण दिन हैं नारी के अस्तित्व के बारे में चिन्तन करने का। कुछ लोगों का मानना है कि नारी-नर दोनों समान हैं। कुछ कहते हैं, नहीं! नर ही ज्यादा बलवान हैं, कुछ का कहना है नारी महान् है। ये विवाद आदिकाल से आज तक चलते ही आये हैं। ये सच है कि आत्मा के स्तर पर सभी आत्माएं समान हैं, लेकिन शरीरों की व अन्तःकरणों की भिन्नता व शक्तियों को नकारा नहीं जा सकता। हर शरीर का व उसकी इन्द्रियों व अन्तःकरण का अपना महत्व होता है। अनेक पैमानों के आधार पर मापने से यह सिद्ध हुआ है कि नारी इस सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट रचना है अथवा यूँ कहें कि प्रत्येक योनि में 'माँ' इस सृष्टि की एक अद्भुत रचना है। किसी ने पूछा कि यदि नारी सचमुच ही सर्वोत्कृष्ट रचना है तो वह सदा पुरुष से दो कदम पीछे ही क्यों चलती है? इसका उत्तर है कि जैसे कोई बड़ा व्यक्ति पथ पर चलता है तो उसके सुरक्षाकर्मी सदा पीछे चलते हैं, उसी प्रकार नारी भी इसलिए सदा पीछे चलती है ताकि जिन्दगी का भार उठाते हुए जब पुरुष आगे बढ़ता है तो कहीं वह डगमगाकर गिर न जाये, इसलिए उसे सम्भालने के लिए सदा उससे दो कदम पीछे चलती है। यद्यपि नारी का अपना स्वरूप ही





‘शक्ति’ है मगर उसे अभिव्यक्त करने के लिए एक प्रक्रिया से गुजरना होता है। यह बात केवल नारी के व्यक्तित्व की ही नहीं किसी भी प्राणी या पेड़-पौधे के व्यक्तित्व के विकास के लिए समान रूप से सत्य है। जो शक्ति की पराकाष्ठा हमें माता कौशल्या, सीता, सावित्री, अञ्जना, मदालसा, कुन्ती, द्रौपदी, वैदिक ऋषिकाएं, महारानी लक्ष्मीबाई, चिनम्मा, झलकारी बाई, अहिल्या बाई होल्कर, मीरा, राबिया, लल्लेश्वरी जैसी महान् नारियों में दृष्टिगोचर होती है, वही शक्ति प्रत्येक नारी में विद्यमान है। बस उसे एक प्रक्रिया से गुजरकर अभिव्यक्त करना है। उस अभिव्यक्ति के साधन हैं- योग, यज्ञ, शिक्षा और संस्कार। योग से मेरा अभिप्राय है- अष्टांग योग। जिस यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधियों को योगीजन अत्यन्त पुरुषार्थ से साध पाते हैं, उसी योग को नारी बड़ी सहजता से साध लेती है। जिस दिन शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनीति व सामाजिक व्यवस्थाएँ पूर्ण रूप से नारी के हाथ में जायेंगी उस दिन इस धरती से युद्ध समाप्त हो जायेंगे, अहिंसा की स्थापना सहज ही हो जायेगी। नारी का व्यक्तित्व आक्रमक नहीं है। दूसरा उपाय है- यज्ञ। यज्ञ का अभिप्राय है दूसरों के हित के लिए जीना। पुरुषों में हजारों में कोई एक है जो साधु-सन्त बनकर ऐसा जीवन जीता है। जबकि महिलाएँ 99 प्रतिशत सहज ही ऐसा जीवन जी लेती हैं। तीसरा उपाय है शिक्षा। एक सुशिक्षित महिला मात्र दो परिवारों को ही नहीं, दो जहाँ को सम्भालने में सक्षम हो जाती है- इहलोक और परलोक। महर्षि दयानन्द कहते हैं कि बहनों को चार प्रकार की विद्या में निष्णात बनाना चाहिए- आयुर्वेद, गणित, अध्यात्म विद्या और पाक विद्या। चौथा साधन है- संस्कार। यद्यपि संस्कार शिक्षा के साथ-साथ ही दी जाने वाली विद्या है। जिस विद्या में संस्कारों का अभाव है, वह वास्तव में विद्या के नाम पर अविद्या ही है। संस्कार रहित विद्या जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों में व्यक्ति की रक्षा नहीं कर पाएगी। तप, त्याग, समर्पण व सेवा के संस्कार शब्द ज्ञान की कमी को पूर्ण कर सकते हैं लेकिन शब्द ज्ञान इन संस्कारों की कमी को कदापि पूर्ण नहीं कर

सकते हैं। सिन्धु ताई जैसी महिला के पास यद्यपि शब्द विद्या तो नहीं थी किन्तु उनके संस्कारों ने उस कमी को पूर्ण कर दिखाया, तो दूसरी तरफ मैं देखती हूँ उच्च डिग्री व डिप्लोमा से युक्त होते हुए भी कुछ बहनें स्वयं भी रोती हैं, अपने माँ-बाप को भी रूलाती हैं। घर टूट जाते हैं- जीवन टूट जाते हैं, ये सब संस्कार विहीन शिक्षा का ही परिणाम है। हमें प्रतिकूल परिस्थितियों में रिएक्ट नहीं करना अपितु परिस्थितियाँ जैसी भी हैं उनको स्वीकार करके उनके पार जाने का संकल्प और शक्ति जुटाने की आवश्यकता है। जीवन में जितनी बड़ी परेशानियाँ होती हैं, उतनी ही बड़ी सम्भावनाएँ भी होती हैं। यही वह प्रक्रिया है जिससे गुजरकर एक नारी सचमुच एक शक्ति स्वरूपा माँ बनकर नर को शिक्षित व सुसंस्कारित कर सकती है। हमसे पहले बहुत महान नारियों ने अपना फर्ज निभाया है, आज हमारी बारी है। प्रत्येक महिला ने कभी न कभी, किसी न किसी संघर्ष को जरूर झेला होगा, जरूर कभी न कभी अपने आँसू बहाए होंगे, कभी सबसे छिपकर तो कभी किसी के सामने, मगर आज आपके हँसने का दिन है, एक ऊँचा संकल्प लेने का दिन है। हम सब महिलाएँ मिलकर एक-दूसरे को आगे बढ़ाते हुए, एक सात्विक दुनिया बनाते हुए, हमें अपनी सन्तानों को भी बचाना है, राष्ट्र व संस्कृति को भी सजाना है और पूरी मानवता को सुखी, समृद्ध व संस्कारवान बनाना है। पुनः आप सबको अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की अनन्त-अनन्त शुभकामनाएँ। <<

